ओशो सुगंधा

जून 2023

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

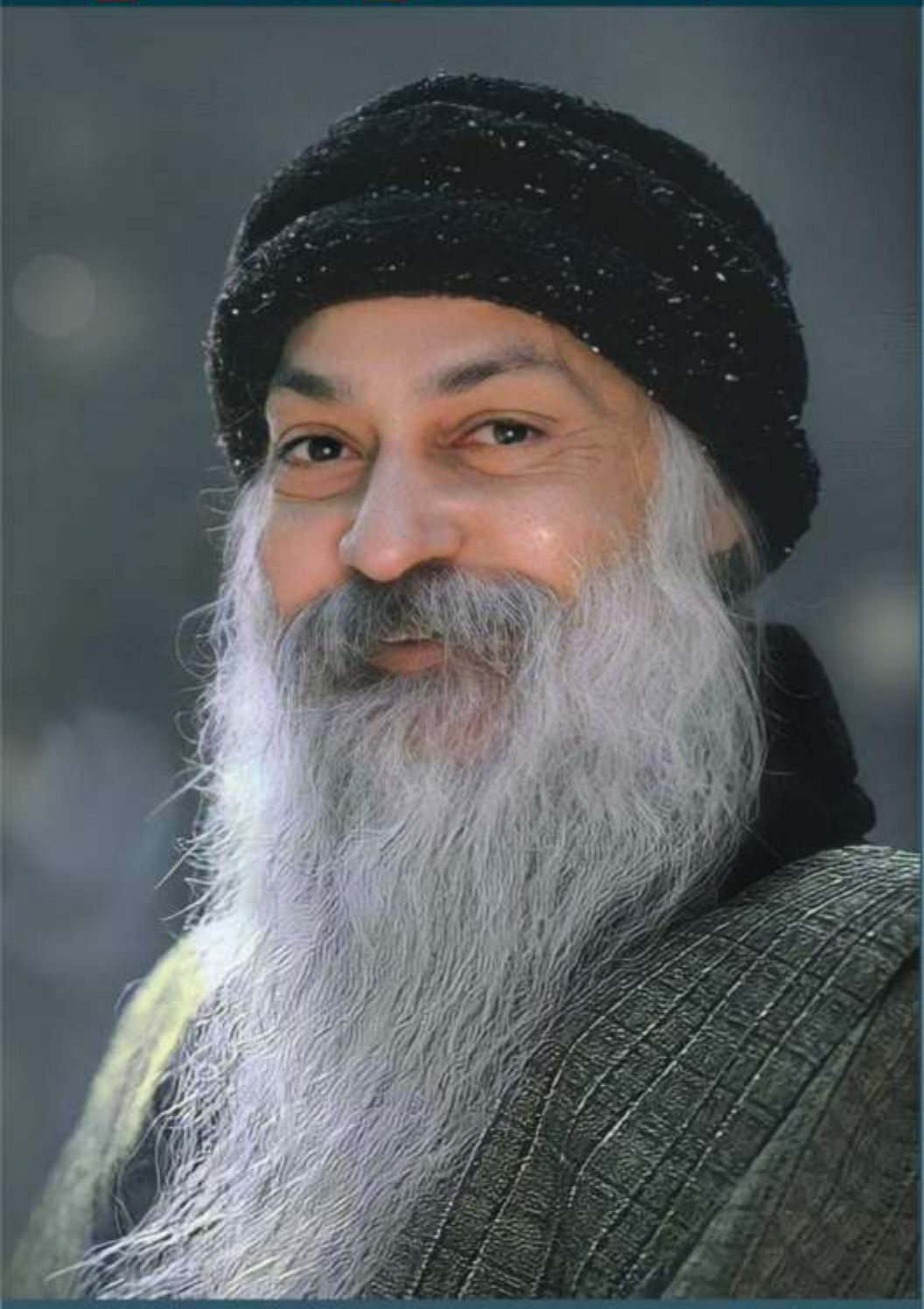

- वास्तविक ईमानदारी कैसे आए?
- योग का सूत्र-लाइफ इज एनर्जी

ओशो सुगंधा

वर्ष-2/अंक-18 जून 2023

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

परमगुरू ओशो के चरणों में समर्पित

◆ **प्रेरणास्त्रोत**
स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं मा अमृत प्रिया

◆ **संपादन एवं संकलन**
मा मोक्ष संगीता

◆ **अन्य सहयोग**
मस्तो बाबा, मा ध्यान मुदिता

◆ **कला एवं साज सज्जा**
आनंद संदेश

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंध

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका की विशेषताएं

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दर्शाए गए चिह्न इस पत्रिका में आपको विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके स्पर्श मात्र से सक्रिय हो जाएंगे

ऑडियो	इस बटन को स्पर्श करते ही आप संगीत का ऑडियो सुन अथवा डाउनलोड कर सकते हैं
वीडियो	इस बटन को स्पर्श करते ही आप वह वीडियो देख सकते हैं
व्हाट्स ऐप	इस बटन को स्पर्श करते ही आप व्हाट्स ऐप पर सम्बंधित व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं
गुगल मैप	इस बटन को स्पर्श करते ही आपके फ़ोन पर उस जगह का गुगल मैप खुल जाएगा
पुस्तक	इस बटन को स्पर्श करते ही आप PDF में पढ़ अथवा डाउनलोड कर सकते हैं
वेब साइट	इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे उस वेब साइट पर जा सकते हैं
क्वोरा	इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे हिंदी में क्वोरा पर पढ़ सकते हैं

अनुक्रम

1. Four Pillars of my Temple 05
2. समाचार 06
3. ये ओशो का मंदिर 10
4. आगामी कार्यक्रम 11
5. वास्तविक ईमानदारी कैसे आए? 13
6. **योग का सूत्र– लाइफ इज एनर्जी** 17
7. दिन को पूरी तरह से जी लो (इस माह का ध्यान) 21
8. बच्चों में अतिन्द्रिय क्षमताओं का विकास 22
9. क्वोरा लिंक 24
10. आदमी ऐसा ही जीता है––तिरछा–तिरछा 25
11. गप्पबाजी में कुशल धार्मिक लोग (सार गर्भित कहानी) 26
12. **Insight into sannyas name** 28
13. **You Tube Links** 30
14. म्यूजिक एलबम – दिल जिससे जिंदा है 32
15. हंस दो जरा 33
16. कबीर जयंती विशेष 34
17. अंतस का जागरण है समाधि : ओशो 35
18. पूर्ण रहस्य का ज्ञान संभव 37
19. संपर्क सूत्र 40
20. पूर्व के संस्करण 41

Four Pillars of my Temple

-Osho

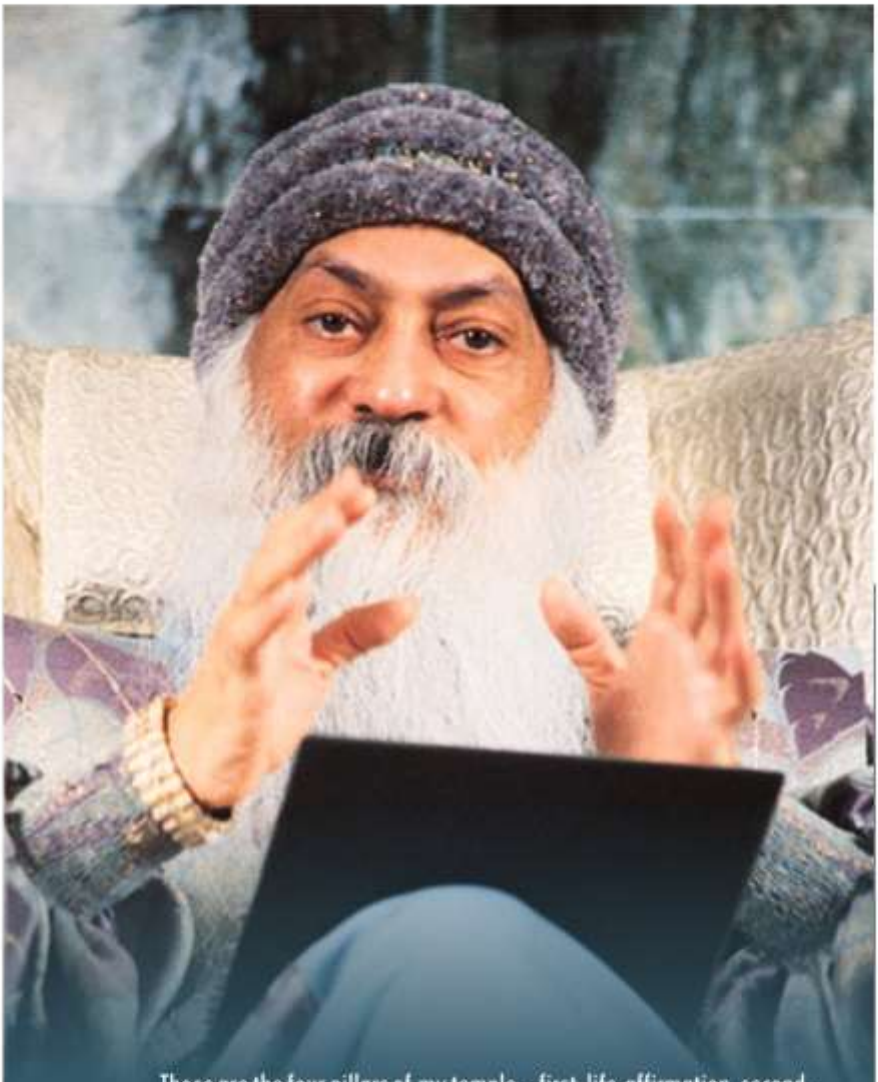

These are the four pillars of my temple -- first, life-affirmation, second, meditation; third, love; and fourth--cannot be expressed in words. It can only be called the fourth, turiya. If you live life totally, meditatively, lovingly, you come to experience something which is inexpressible. Lao Tzu calls it Tao, Buddha calls it Dhamma, Jesus calls it Logos: different names indicating towards the nameless experience. If you prefer you can call it God. My own liking is to call it "godliness", not "God", because God gives you the idea of a person and godliness simply gives you the idea of a presence.

These are the four pillars of my temple, and each sannyasin has to grow these four pillars because each sannyasin has to become a temple of godliness.

-OSHO, The Wild Geese and the Water #1

हरिभूमि

रोहतक - सोनीपत

7 May 2023

स्वामी शैलेंद्र व मां अमृत प्रिया ध्यान मंदिर की शुरूआत करेंगे

गई। हाईवे के साथ लगने वाले गांव कुमासपुर-दीपालपुर रोड पर रजनीश ध्यान मंदिर की भव्य शुरूआत होगी। नव-निर्मित भव्य ध्यान मंदिर में मनीषी ओशो के भाई स्वामी शैलेंद्र सरस्वती और मां अमृत प्रिया की जोड़ी के दर्शनों का लाभ लेने के लिए अनुयायियों की भीड़ आश्रम पहुंचने लगी है। डॉक्टर होते हुए भी स्वामी शैलेंद्र बहुत सरल ध्यान प्रयोगों एवं व्याख्यानों द्वारा सारी दुनिया में ओशो-संदेश को प्रसारित करते हैं। देश-विदेश में इनके अनुयायियों की संख्या आज लाखों में है। ओशो फ्रेगरेंस के नए बने ध्यान मंदिर परिसर में

स्वामी शैलेंद्र सरस्वती व मां अमृत प्रिया द्वारा संचालित आश्रम में पहुंचे।

इटालियन फिल्म निर्माता द्वारा ओशो मूवी रिलीज की है। पुणे, महाराष्ट्र से पहुंचे गायक एवं संगीतकार स्वामी प्रेम मंडाली द्वारा शाम साढ़े छह बजे से भजन-कीर्तन कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगी।

मुर्शिदपुर में आज ध्यान साधना केंद्र

जागरण, सोनीपत : हाईवे के साथ लगने वाले गांव कुमासपुर-दीपालपुर रोड पर स्थित मुर्शिदपुर ग्राम में रविवार को विश्वविख्यात दार्शनिक के नाम पर रजनीश ध्यान मंदिर की शुरुआत होगी। नव-निर्मित भव्य ध्यान मंदिर में प्रख्यात मनीषी ओशो के भाई स्वामी शैलेंद्र सरस्वती और मां अमृत प्रिया के दर्शन करने के लिए अनुयायी मंदिर में पहुंचे हैं। मां अमृत प्रिया जी के जन्मदिवस पर ध्यान मंदिर का उद्घाटन होने जा रहा है। ओशो फ्रेगरेंस के नए बने ध्यान मंदिर परिसर में रविवार को होने वाले समारोह में अपराह्न तीन से साढ़े तीन बजे तक रजिस्ट्रेशन होगा। तत्पश्चात ओशो के ... नामक फिल्म दिखाई जाएगी। एक इटालियन फिल्म निर्माता ने हाल ही में एक ओशो मूवी रिलीज की। महाराष्ट्र से पहुंचने वाले गायक व संगीतकार स्वामी प्रेम अनादि की मंडली द्वारा भजन-कीर्तन कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।

श्री रजनीश ध्यान मंदिर का भव्य उद्घाटन

'ओशो की नई बगिया से उनके जीवन-दर्शन की सुगंध दूर-दिगंत तक फैलेगी।'

सोनीपत जिला में श्री रजनीश ध्यान मंदिर का भव्य उद्घाटन। ओशो के द्वारा उपयोग किए गए वस्त्रों की प्रतिष्ठा। ओशो ने अपने मंदिर के मुख्य चार स्तंभ बताए हैं- जीवन का सम्मान, ध्यान, प्रेम एवं प्रभु-संगीत।

७ मई, सोनीपत। ६५० पुस्तकों के रचनाकार ओशो के शिष्यों के लिए रविवार का दिन कुछ विशेष यादगार दिवस बन गया है। जिला सोनीपत में, कुमासपुर-दीपालपुर रोड पर स्थित मुर्शिदपुर ग्राम में विश्वविख्यात दार्शनिक के नाम पर 'श्री रजनीश ध्यान मंदिर' का दिव्य शुभारंभ संपन्न हुआ। ओशो के इस नए उपवन से अब उनके जीवन-दर्शन की सुगंध दूर-दिगंत तक फैलेगी। नव-निर्मित भव्य साधना स्थल में प्रख्यात मनीषी ओशो के भाई स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी और मां अमृत प्रिया की जोड़ी के दर्शनार्थ लगभग सात सौ अनुयायी आश्रम पधारे।

श्री रजनीश ध्यान मंदिर में एक बेहद खुबसूरत स्थान बनाया गया है- 'उपासना गृह'। इसमें ओशो के द्वारा उपयोग की गई वस्तुओं को प्रतिष्ठित किया जाएगा। उन वस्तुओं में ओशो की दिव्य ऊर्जा तरंगें समाई हुई हैं, जिनकी मौजूदगी में शांत बैठकर साधक-साधिकाएं एक खास प्रकार की साधना, उपासना करेंगे। 'ओशो के द्वारा उपयोग किए गए वस्त्र सुंदर कांच की आलमारी में मंच पर प्रतिष्ठित किए गए। प्रतीकात्मक रूप से ओशो की कुर्सी भी मंदिर में स्थापित की गई।'

मां अमृत प्रिया जी के जन्मदिन के उपलक्ष में ध्यान मंदिर का उदघाटन हुआ जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के मित्र उपस्थित रहे। इटली से पधारे एक फिल्म निर्माता एवं ओशो के संन्यासी ने हाल ही में एक 'ओशो मूवी' रिलीज की है। जन्मोत्सव समारोह में दोपहर चार बजे से 'ओशो के दस हज़ार रंग' नामक यह फिल्म देखकर ओशो प्रेमीगण भाव विभोर हो गए।

'पुणे, महाराष्ट्र से पहुंचे सुप्रसिद्ध गायक एवं संगीतकार स्वामी प्रेम अनादि की मंडली ने शाम साढ़े छह बजे से भजन-कीर्तन कार्यक्रम प्रस्तुत किया। ओशो भक्तगण खूब नाचे, गाए, झूमे। उत्सव के पश्चात् प्रसाद के तौर पर स्वादिष्ट रात्रि भोज की भी व्यवस्था की गई थी। उल्लेखनीय है कि इस उत्सव में पुणे से आए शैलेंद्र जी के भाई और भाभी, स्वामी निकलंक भारती जी और मां प्रेम शकुन जी भी सम्मिलित हुए।'

कुछ झलकियां-

रविवार, ४जून के ऑनलाइन प्रवचन को इंदौर में योगोत्सव में भाग ले रहे हजारों जिज्ञासुओं ने सुना एवं सराहा। अगले दिन के अखबारों में यह समाचार सुर्खियों में प्रकाशित हुआ। २१ मिनिट के इस संक्षिप्त उद्‌बोधन में २१ बिंदु बताए गए, जहां आधुनिक विज्ञान, योग के प्राचीन दर्शन का समर्थन करता है।

स्वामी जी का उद्‌बोधन १घंटे २ मि से सामने दिए गए लिंक पर -

ये ओशो का मंदिर

स्वामी यशवंत देव

ये ओशो का मंदिर है
ये मेरा तुम्हारा ये सबका घर है
==========
आओ स्वागत है सभी का
चखा लो अपनापन अनोखा
फैली भुजाओं में प्रेम की गागर है
==========
यहां ढंग मस्त है जीने का
खूब हंसने और हंसाने का
रोने का नजारा भी कितना सुंदर है
==========
यहां सांसें अटकती नही है
उम्मीदें सिसकती नही है
हर ख्वाहिश का आदर यहां पर है
==========
यहां चर्चाएं चलती नही
हर तरफ है मौन सही
सच्चे का बोलबाला यहां पर है
==========
है मंदिर के स्तंभ चार
ध्यान प्रेम एवं ओंकार
जीवन का समादर यहां पर है

WWW.OSHOFRAGRANCE.ORG

OSHO FRAGRANCE

Schedule For Residential Programs

RAJNEESHFRAGRANCE OSHOFRAGRANCE

Date	Program	Place
13-17 June 12th eve to 17th noon	मिड ब्रेन एक्टिवेशन बच्चों के लिए कार्यक्रम	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
18 June	स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी का जन्मोत्सव (नोट: इस वर्ष 17 नहीं, 18 जून को उत्सव होगा)	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
19-24 June	काम-क्रोध मुक्ति शिविर नकारात्मक से सकारात्मक भावनाओं की ओर सफर	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
3 July	गुरु पूर्णिमा उत्सव आनंद उत्सव अहोभाव	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
3-8 July	कैवल्य साधना शिविर ब्रह्म ज्ञान का अनुभव	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
10-15 July	महागीता साधना शिविर परम साक्षी का अनुभव	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
17-22 July	निर्वाण साधना शिविर निर्वाण का अनुभव	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
7-12 August	ओशो जीवन-कला प्रेम व स्वतंत्रता का समन्वय	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
14-19 August	'हरि ओम तत्सत' ओंकार नाद का अनुभव	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
20 August	एक-दिवसीय ध्यान एवं उत्सव	Osho Paavan Dham, Garhi Harsaru-Budhera Road (near Chhilna Mandir) Sadhrana, Gurugram, Haryana 122505 Contact - 9810473070, 9319660302, 9810426175
24-27 August 24 eve to 27th noon	गीता ध्यान यज्ञ (अध्याय-13) भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बताए क्षेत्र क्षेत्रज्ञ विभाग योग की साधना	Khategaon Inderprastha (Sampada) Dewas(M.P) Contact - 9893608461, 9754865777, 8458912036, 9827812398
3-8 September	सूफी साधना शिविर 'प्रेम है द्वार प्रभु का' और 'प्रेम पंथ ऐसो कठिन' पर आधारित	Osho Dhyan Upvan, Hisar, Haryana Contact - 9205170237
11-16 September	ओशो पत्र संदेश 'पथ के प्रदीप' नामक पुस्तक में लिखे संदेशों पर आधारित साधना	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
18-23 September	ओशो साधना सूत्र शिविर परमात्मा के प्रकाश का अनुभव	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
2-7 October	मीरा: ओशो की दृष्टि में 'पद घुंघरू बांध' प्रवचन माला पर आधारित	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
9-14 October	ओशो अध्यात्म साधना शिविर 'अध्यात्म उपनिषद' की अनूठी व्याख्या और साधना के प्रयोग	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
16-21 October	ओशो ध्यानयोग शिविर 'ध्यानयोग: प्रथम और अंतिम मुक्ति' पर आधारित साधनाएं	1883, Osho Amritdham Ashram, Devtal, Garha, Jabalpur. 482003 Contact -7828184233, 8717961278
30 Oct-4 Nov	भय-मुक्ति साधना शिविर डर लगने के कारण और उनसे निवारण के उपाय	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
5-10 November	ओशो कुंडलिनी जागरण शिविर 'जिन खोजा तिन पाइया' में वर्णित चक्रों और सात शरीरों की साधना	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
18 November	सत्संग	Nepal
19-23 November	अमृत साधना शिविर अमृत चैतन्य का अनुभव	Pokhra, Nepal
25-29 November	समाधि के सप्त द्वार गैडम ब्लावट्स्की की किताब 'सेवन पोर्टल्स' पर व्याख्यान और ध्यान	Pokhra, Nepal
11 December	ओशो जन्मोत्सव	Shree Rajneesh Dhyan Mandir
11-16 December	साउंड ऑफ रनिंग वॉटर पर आधारित साधना शिविर	Shree Rajneesh Dhyan Mandir

Osho Fragrance - Shree Rajneesh Dhyan Mandir,
Kumashpur-Deepalpur Road, Vill. Murshidpur,
Bahalgarh, Distt. Sonipat, Haryana.

OSHO FRAGRANCE RECEPTION NUMBERS - 7988229565, 7988969660
TIMINGS : 9 AM TO 1.30 PM & 2 PM TO 6 PM (ALL DAYS)

OSHO FRAGRANCE

Schedule For Online Programs

RAJNEESHFRAGRANCE

OSHOFRAGRANCE

Please register at the following numbers (10 am-8pm)

9464247452, 9311806388
9811064442, 9466661255
9890341020, 8889709895

Date	Program
13-18 June	अनहद में विश्राम ओंकार नाद का अनुभव
18 June	स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी का जन्मोत्सव (नोट: इस वर्ष 17 नहीं, 18 जून को उत्सव होगा)
27 June-2 July	काम-क्रोध मुक्ति शिविर नकारात्मक से सकारात्मक भावनाओं की ओर सफर
3 July	गुरु पूर्णिमा उत्सव आनंद उत्सव अहोभाव
11-16 July	कैवल्य साधना शिविर ब्रह्म ज्ञान का अनुभव
25-30 July	महागीता साधना शिविर परम साक्षी का अनुभव
8-13 August	निर्वाण साधना शिविर निर्वाण का अनुभव
22-27 August	ओशो जीवन-कला प्रेम व स्वतंत्रता का समन्वय
5-10 September	'हरि ओम तत्सत' ओंकार नाद का अनुभव
19-24 September	ओशो पत्र संदेश 'पथ के प्रदीप' नामक पुस्तक में लिखे संदेशों पर आधारित साधना
3-8 October	ओशो साधना सूत्र शिविर परमात्मा के प्रकाश का अनुभव
17-22 October	मीरा: ओशो की दृष्टि में 'पद घुंघरू बांध' प्रवचन माला पर आधारित
31 Oct-5 Nov	ओशो अध्यात्म साधना शिविर 'अध्यात्म उपनिषद' की अनूठी व्याख्या और साधना के प्रयोग
14-19 November	भय-मुक्ति साधना शिविर डर लगने के कारण और उनसे निवारण के उपाय
28 Nov-3 Dec	ओशो कुंडलिनी जागरण शिविर 'जिन खोजा तिन पाइयां' में वर्णित चक्रों और सात शरीरों की साधना
11 December	ओशो जन्मोत्सव
12-17 December	साउंड ऑफ रनिंग वॉटर पर आधारित साधना शिविर

महागीता साधना शिविर

परम साक्षी का अनुभव

10-15 जुलाई 2023

(10 सुबह से 15 दोपहर तक)

स्थान -

श्री रजनीश ध्यान मंदिर, कुमाशपुर-दीपालपुर रोड, बहालगढ, जिला - सोनीपत, हरियाणा

आवासीय शिविर

बुकिंग एवं अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

7988229565, 7988969660

TIMINGS : 9 AM to 1.30 PM & 2 PM to 6 PM (Monday to Saturday)

OSHOFRAGRANCE RAJNEESHFRAGRANCE

वास्तविक ईमानदारी कैसे आए?

–ओशो

एक बदमाश था, जिसे गांव के लोगों ने पकड़ा और एक पेड़ से बांध लिया। और उससे कहा कि तुम्हें आज शाम तक हम समुद्र में डुबो देंगे। यह कहकर वे लोग अपने काम पर चले गये। इस बीच एक गड़रिया आया और उसने बदमाश से पूछा कि क्यों यहां बंधे पड़े हो? चालाक बदमाश ने कहा, 'कुछ लोगों ने मुझे इसलिये बांध दिया कि मैंने उनके रुपये लेने से इनकार कर दिया।' हैरत में आकर गड़रिये ने पूछा, 'वे तुम्हें रुपये क्यों देना चाहते थे?

और तुमने रुपये लेने से इनकार क्यों किया? 'बदमाश बोला, 'मैं धार्मिक आदमी हूं और वे लोग हैं अधार्मिक; और वे मुझे पथ–भ्रष्ट करना चाहते हैं।'

गड़रिये ने कहा कि 'मैं तुम्हारी जगह यहां बैठता हूं; तुम मुक्त हुए।' दोनों ने जगह बदल ली। शाम के समय गांव के लोग आये, उन्होंने गड़रिये को बोरे में बंद किया और उसे जाकर समुद्र में डुबो दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल गांव वाले यह देखकर हैरान हुए कि वही बदमाश भेड़ों का एक झुंड लिये गांव में हंसता प्रवेश कर रहा है। उनके पूछने पर बदमाश ने बताया, 'समुद्र में बड़े दयावान जीव रहते हैं, वे उन सबको पुरस्कृत करते हैं, जो समुद्र में कूदकर डूब जाते हैं।'

फिर क्या था, गांव के लोग भागे और समुद्र में जा डूबे। और वह बदमाश गांव का अब मालिक बन बैठा। हम आपसे यह कहानी समझना चाहते हैं।

ऐसे ही बदमाश सारे संसार के मालिक बन बैठे हैं। संसार की संपदा पानी हो तो सरलता बाधा है। संसार को जीतना हो तो ईमानदारी मार्ग नहीं; बेईमानी गणित है।

यह कहानी आदमियों की कहानी है। इस संसार में ठीक ऐसा ही हो रहा है। बुद्धिमानी का उपयोग लोग जीवन के सत्य को पाने के लिये नहीं, बुद्धिमानी का उपयोग लोग दूसरे का शोषण करने के लिये; बुद्धिमानी का उपयोग स्वयं के अनुभव को पाने के लिये नहीं, सृजनात्मक नहीं, विध्वंसात्मक करते हैं। इसलिये जैसे–जैसे बुद्धि बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे बेईमानी बढ़ती जाती है।

विचारक हमेशा से परेशान रहे हैं कि दुनिया जितनी शिक्षित होती है उतनी बुरी क्यों हो जाती है? अशिक्षित आदमी में थोड़ी भलाई भी हो, शिक्षित आदमी में भलाई की सारी जड़ें टूट जाती हैं। और जैसे-जैसे हम शिक्षा को सुलभ बनाते हैं, वैसे-वैसे लोग साधु नहीं होते, असाधु होते चले जाते हैं।

पश्चिम के एक बहुत बड़े विचारक डी. एच. लारेन्स ने एक सुझाव दिया था कि अगर दुनिया से बेईमानी, बदमाशी मिटानी हो तो कम से कम सौ वर्षों के लिये हमें सभी विद्यालय, सभी विद्यापीठ बंद कर देने चाहिये।

आदमी के पास जितनी बुद्धि बढ़ती है, उतनी बुराई करने की क्षमता बढ़ती है। होना उल्टा चाहिये कि बुद्धि प्रज्ञा बने; समझ आत्मज्ञान की तरफ ले जाये; लेकिन यह होता नहीं। समझ दूसरे के विनाश की तरफ ले जाती है। शायद जिसे हम समझ कहते हैं वह समझ नहीं है, समझ का धोखा है। पूरे मनुष्य जाति का इतिहास इस बात का गवाह है, कि जैसे ही मनुष्य ने आदिम सरलता खोई, वैसे ही जीवन में कष्ट और तकलीफें बढ़ गईं।

और यह तो उस गांव में एक बदमाश था, इसने इतना उपद्रव किया, पूरे गांव को विनष्ट कर दिया। तुम्हारे गांव में तो सभी बदमाश हैं। पूरी पृथ्वी बदमाशों से भरी है। आदिम मनुष्य का भोलापन इतनी सरलता से क्यों खो जाता है? जरा-सी शिक्षा तुम्हें नष्ट क्यों कर देती है?

कुछ बातें समझनी चाहिये। पहली बात, आदिम मनुष्य का जो भोलापन है, वह वस्तुतः भोलापन नहीं है, वह केवल अभाव है। आदिम मनुष्य बेईमानी नहीं कर सकता क्योंकि बेईमानी करने के लिये एक तरह की कुशलता चाहिये, जो उसके पास नहीं है। इसलिये गांव में जो भोला आदमी दिखाई पड़ता है, वह वस्तुतः भोला नहीं है। उसको मौका मिले तो वह भी उतना ही शैतान सिद्ध होगा, जितना बड़े नगरों के लोग शैतान सिद्ध होते हैं। और अकसर तो वह ज्यादा शैतान सिद्ध होता है। अगर गांव का आदमी शिक्षित हो जाये, थोड़ा कुशल हो जाये तो शहर के आदमी से ज्यादा उपद्रवी सिद्ध होता है। क्योंकि उसके उपद्रव ऐसे हैं, जैसे कोई जमीन बहुत दिन तक बंजर पड़ी रही हो, उसमें कोई फसल न ली गई हो, फिर उसमें फसल ली जाये तो वह बहुत फसल दे। क्योंकि दूसरी जमीन तो अब शोषित हो चुकी है, उसकी जमीन बिल्कुल खाली पड़ी है। गांव का सीधा-साधा आदमी जब भी शिक्षित हो जाता है, कुशल हो जाता है तो उसमें बदमाशी की बड़ी फसल लगती है। वह शहर के आदमियों को पराजित कर देता है। उसका भोलापन झूठा है।

तो दो तरह के भोलापन हैं: एक तो भोलापन है, जो संत का है। संत का भोलापन अनुभव से आया है। उसने जीवन में गुजरकर देखा है और पाया कि बेईमानी चाहे तत्क्षण कुछ भी देती मालूम पड़ती हो, अंततः सब कुछ छीन लेती है। उसने अनुभव से पाया कि दूसरे को नुकसान पहुंचाना भला पहले दिखाई पड़ता हो कि दूसरे को नुकसान पहुंचा रहे हैं, लेकिन अंततः अपने ही हाथ-पैर कट जाते हैं। उसने जीवंत अनुभव से यह सीख ली कि जो गड्ढा तुम दूसरे के लिये खोदते हो, आखिर में तुम पाओगे कि वह तुम्हारी ही कब्र बन जाती है। इस अनुभव के कारण वह बेईमानी छोड़ता है। कुशल नहीं है ऐसा नहीं, बेईमानी नहीं कर सकता है ऐसा नहीं; कर सकता है, लेकिन अनुभव ने उसे बताया कि बेईमानी हितकर नहीं है। स्वयं के हित में भी नहीं है। दूसरे को तो नुकसान पहुंचाती है अभी, और स्वयं को नुकसान पहुंचाती है अंततः, इसलिये वह भोला हो गया है, वह सरल हो गया है।

यह सरलता बड़ी कीमती है, गंभीर है, गहरी है। यह सरलता बड़ी समृद्ध है क्योंकि अनुभव का आधार है। एक गांव का ग्रामीण है, या एक छोटा बच्चा है; छोटे बच्चे गांव के ग्रामीण जैसे हैं। छोटा बच्चा भोला मालूम पड़ता है लेकिन भोला है नहीं, तैयारी कर रहा है। अभी शरारत के बीज अंकुरित नहीं हुए हैं, जल्दी ही अंकुरित होंगे। गांव का आदिम आदमी तैयारी कर रहा है, प्रतीक्षा कर रहा है। जब कुशल हो जायेगा, तब उसके खेत में बड़ी बुराई की फसल आयेगी।

हर बच्चा देवता जैसा पैदा होता है और शैतान जैसा मरता है। बच्चों की शक्ल देखें, सभी बच्चे प्यारे मालूम होते हैं। कोई बच्चा कुरूप नहीं मालूम होता, सभी बच्चे सुंदर होते हैं। फिर यह सारे सुंदर बच्चे कहां खो जाते हैं? लोगों को देखें तो लोग कुरूप मालूम होते हैं। जब वे बच्चे थे खुद, तब बड़े सुंदर थे। यह पृथ्वी सौंदर्य से भर जानी चाहिये। इतने सुंदर बच्चे पैदा होते हैं! लेकिन जैसे ही समझ बढ़ती है, जैसे ही कुशलता आती है, वैसे ही विकृति शुरू हो जाती है।

तो दो उपाय हैं आपके भी भोले होने के। एक तो उपाय है कि समझ को आने ही मत देना। एक तो उपाय है कि शिक्षित होना ही मत। एक तो उपाय है सभ्य बनना ही मत। परिस्थिति से दूर ही रहना।

गांधी जैसे विचारक इसी उपाय की सलाह देते हैं। वे कहते हैं, दुनिया से बड़े उद्योग समाप्त करो। शिक्षालय बंद करो। ट्रेनें, हवाई-जहाजें मत चलाओ। यांत्रिकता हटाओ। आदमी को वापस जंगल की तरफ ले चलो। क्योंकि जंगल का आदमी बड़ा भोला था।

उनका तर्क बहुत गहरा नहीं है क्योंकि जंगल का आदमी अगर सच में ही भोला था तो यह सारी बेईमानी फिर किससे पैदा हुई? कहां से आई? एक तो ऐसा आदमी है, जो इतना कमजोर है कि चोरी नहीं कर सकता, इसलिये साधु मालूम पड़ता है। एक आदमी इतना अशिक्षित है कि झूठ बोलने में झंझट है। झूठ बोलने के लिये थोड़ी बुद्धि चाहिये। और झूठ बोलने के लिये अच्छी याददाश्त चाहिये। अगर स्मृति कमजोर हो तो आप झूठ नहीं बोल सकते। क्योंकि घड़ी भर बाद आपको याद ही न रहेगा, किससे क्या कहा!

तो एक आदमी इसलिये सच बोलता है, क्योंकि झूठ बोलने के लिये जितनी कुशलता चाहिये, वह उसमें नहीं है। जो तकनीक बेईमानी के लिये चाहिये, वह उसमें नहीं है। लेकिन चाहता तो वह भी बेईमान होना है। तो वह प्रतीक्षा कर रहा है। जब सुविधा मिलेगी, तब वह भी बेईमान हो जायेगा। बीज पड़ा है जमीन में, वर्षा की प्रतीक्षा कर रहा है। जब बादल घिरेंगे और बरसेंगे तो बीज अंकुरित हो जायेगा।

तो गांधी जैसे विचारक सलाह देते हैं कि बादलों को बरसने ही मत दो। न बरसेंगे बादल, न बीज अंकुरित होगा। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। लेकिन यह कोई बड़ी गहरी समझ की बात नहीं है। क्योंकि बांसुरी भला न बजे, उसके स्वर तो भीतर गूंजते ही रहेंगे। बेईमानी भला बाहर न

आये असमर्थता के कारण, लेकिन गहरे में बीज तो विषाक्त करता ही रहेगा। मैं इस तरह के विचारकों से राजी नहीं हूं। मैं तो कहता हूं, अनुभव से गुजरकर जो सरलता आये वही वास्तविक है। आग से गुजरकर जो सोना बचे, वही असली सोना है। इस डर से कि कहीं जल न जाये, हम आग के बाहर ही रख लें तो वह सोना असली नहीं है। और भय बता रहा है कि कचरे का डर है।

शिक्षित तो होना ही होगा। बच्चे को जवान होना ही होगा। बच्चे को बच्चे में कैसे रोका जा सकता है? आदिम आदमी सभ्य बनेगा, गांव मिटेंगे, महानगर बसेंगे। इससे बचने का कोई भी उपाय नहीं है। पीछे जाना संभव भी नहीं है। जैसे जवान बच्चा नहीं हो सकता फिर से, वैसे ही शहर के आदमी को गांव नहीं ले जाया जा सकता।

तो गांधी कितना ही कहें, कोई फर्क नहीं पड़ता। लोग सुन लेते हैं, सिर हिला देते हैं, लेकिन उनका जीवन जिस ढांचे में है, वैसा ही चलता जाता है। और गांधी कितना ही कहें, उनकी खुद की जीवन–व्यवस्था भी आधुनिक यंत्रों पर ही निर्भर होती है। ट्रेन में यात्रा करनी पड़ती है, मोटर में बैठना पड़ता है। गांधी की बात का प्रचार भी करना हो तो भी बड़े प्रेस का उपयोग करना पड़ता है, लाऊडस्पीकर पर बोलना पड़ता है। इस सभ्यता के खिलाफ भी बोलना हो तो इसी सभ्यता का उपयोग करना पड़ता है। और जिसका हम उपयोग करते हैं, उसको हम नष्ट कैसे करेंगे? वह हमारे उपयोग से मजबूत होती है, बढ़ती है।

और गांधी कोई पहले व्यक्ति नहीं हैं, रूसो ने, टॉलस्टॉय ने, रस्किन ने, सभी ने पीछे लौटने की बात की है। गांधी पर रस्किन, थोरो और इमर्सन का बड़ा प्रभाव है। लेकिन कोई भी पीछे लौट नहीं सकता। पीछे लौटने का कोई मार्ग ही नहीं है। सब मार्ग आगे की तरफ जाते हैं; इसलिये मेरा सुझाव गांधी से बिल्कुल विपरीत है।

मेरा सुझाव है, जितनी जल्दी हो सके अनुभव से गुजरो, लेकिन अनुभव से होश पूर्वक गुजरो ताकि अनुभव तुम्हें उसकी पूर्णता में दिखाई पड़ जाये। बीज से लेकर अंत तक, प्रथम से लेकर अंत तक तुम अनुभव को देख लो। जो व्यक्ति भी अनुभव को पूरा देख लेंगे, उनके जीवन से बेईमानी मिट जायेगी।

– बिन बाती बिन तेल–8

योग का सूत्र- लाइफ इज एनर्जी

–ओशो

योग का पहला सूत्र है कि जीवन ऊर्जा हैं, लाइफ इज एनर्जी–जीवन शक्ति है। बहुत समय तक विज्ञान इस सम्बन्ध में राजी नहीं था, अब राजी है। बहुत समय तक विज्ञान सोचता था कि जगत पदार्थ है, मैटर है। लेकिन जिन्होंने विज्ञान की खोजों से हजारों वर्ष पूर्व यह घोषणा प्रसारित की कि पदार्थ एक असत्य है, एक झूठ है, एक इलूजन है, एक भ्रम है–भ्रम का मतलब यह नहीं कि नहीं है, भ्रम का मतलब–जैसा दिखाई पड़ता है वैसा नहीं है और जैसा है वैसा दिखाई नहीं पड़ता हैं।

लेकिन विगत तीस वर्षों से विज्ञान को एक–एक कदम योग के अनुरूप जाना पड़ा है। अट्ठारहवीं सदीं में वैज्ञानिक की घोषण थी कि परमात्मा मर गया है, आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है, पदार्थ ही सब कुछ है। लेकिन विगत तीस वर्षों में ठीक उल्टी स्थिति हो गयी है। विज्ञान को कहना पड़ा कि पदार्थ है ही नहीं सिर्फ दिखायी पड़ता है। ऊर्जा ही सत्य है, शक्ति का सत्य है लेकिन शक्ति की तीव्र गति के कारण पदार्थ का अभास होता है। दीवारें दिखाई पड़ रही हैं, अगर निकलना चाहें तो सिर टूट जायेगा– कैसे कहें कि दीवारे भ्रम हैं? स्पष्ट दिखाई पड़ रही हैं कि उनका होना है।

पैरों के नीचे जमीन है, अगर न हो तो आप खड़े कहाँ रहेंगे? नहीं, इन अर्थों में नहीं, विज्ञान कहता है कि पदार्थ नहीं है, इन अर्थों में कहता है कि जो हमें दिखाई पड़ रहा है, वैसा नहीं है। अगर हम एक बिजली के पंखें को बहुत तीव्र गति से चलाये तो उसकी तीन पंखुड़ियां तीन दिखाई पड़नी बन्द हो जायेगी, क्योंकि पंखुड़ियां इतनी तेजी से घूमेंगी कि उनकी बीच की खाली जगह, इसके पहले कि आप देख पायें, भर

जायेंगी। इसके पहले कि खाली जगह आंख की पकड़ में आये, कोई पंखुड़ी खाली जगह पर आ जायेगी। अगर बहुत तेज बिजली के पंखें को घुमाया जाये तो आपको तीन का एक गोल वृत्त घूमता हुआ दिखाई पड़ेगा, पंखुड़ियां दिखाई नहीं पड़ेगी आप गिनती करके नहीं बता सकेंगे कि कितनी पंखुड़ियां है। अगर और तेजी से घुमाया जा सके तो आप पत्थर फैककर पार नहीं निकाल सकेंगे, पत्थर इसी पार गिर जायेगा। अगर उतनी तेजी से घुमाया जा सके, जितनी तेजी से परमाणु घूम रहे हैं अगर उतनी तेजी से बिजली के पंखे को घुमाया जा सके तो आप मजें से उसी पर बैठ सकते हैं। आप गिरेंगे नहीं ओर आपको पता भी नहीं चलेगा पंखुड़ियां नीचे घूम रही हैं, क्योंकि पता चलने में जितना वक्त लगता है उसके पहले नयी पंखुड़ी नीचे आ जायेगी। आपके पैर खबर दें आपके सिर को कि पंखुड़ी बदल गयी, इसके पहले दूसरे पंखुड़ी आ जायेगी। बीच के गैप, बीच के अन्तराल का पता न चले तो आप मजे से खड़े रह सकेंगे।

ऐसे ही हम खड़े हैं अभी भी। अणु जिस तीव्रता से घूम रहे हैं उनके घूमने की गति तीव्र है, इसलिए चीजें ठहरी हुई मालूम पड़ती हैं।

जगत में कुछ भी ठहरा हुआ नहीं है। और जो चीजें ठहरी हुई मालूम पड़ती हैं, वे सब चल रही हैं। अगर वे चीजें भी चलती हुई हाती तो भी कठिनाई नहीं थी। जितना ही विज्ञान परमाणु को तोड़कर नीचे गया और उसे पता चला कि परमाणु के बाद पदार्थ नहीं रह जाता, सिर्फ 'ऊर्जा–कण', 'इलेक्ट्रॉन्स' रह जाते हैं, 'विद्युत्–कण' रह जाते हैं। उनको कण कहना भी ठीक नहीं हे, क्योंकि कण से पदार्थ का ख्याल आता हैं, इसलिए अंग्रेजी में एक नया शब्द हमें जोड़ना पड़ा उस शब्द का नाम 'क्वाण्टा' है।

'क्वाण्टा' का मतलब है–कण भी, कण नहीं भी; कण भी और लहर भी, एक साथ। विद्युत की तो लहरें हो सकती हैं, कण नहीं हो सकता है। शक्ति की लहरें हो सकती हैं। कण नहीं हो सकते। लेकिन हमारी भाषा पुरानी है, इसलिए हम 'कण' कहे चले जाते हैं। 'कण' जैसी कोई भी चीज नहीं है। और विज्ञान की नजरों में यह सारा जगत ऊर्जा का, विद्युत की ऊर्जा का विस्तार है।

योग का पहला सूत्र यही है जीवन ऊर्जा है, शक्ति है। दूसरा सूत्र है योग का शक्ति के दो आयाम हैं। एक अस्तित्व और एक अनस्तित्व। एग्जिस्टेन्स और नॉन–एग्जिस्टेन्स।

शक्ति अस्तित्व में भी हो सकती है और अनस्तित्व में भी हो सकती है। अनस्तित्व में जब शक्ति होती हैं तब जगत का शून्य होता हैं और जब अस्तित्व में होती है तब सृष्टि का विस्तार होता हैं। जो भी चीज है, योग मानता है, वह 'नहीं है'। जो भी है, वह न–होने में समाप्त होती है। जिसका जन्म है, उसकी मृत्यु है। जिसका होना है, उसका न–होना भी है। जो दिखाई पड़ती है, वह न–दिखाई भी पड़ सकती है। योग मानता है, इस जगत में प्रत्येक चीजें दोहरे आयाम की है, डबल डायमेन्शन्स की है। इस जगत में कोई भी चीजे एक–एक आयामी नहीं है। हम ऐसा नहीं कह सकते हैं कि एक आदमी

पैदा हुआ और फिर नहीं मरा। हम कितना ही लम्बा करें उसके जीवन को, फिर-फिर के हमें पूछना पड़ेगा। कभी तो मरा होगा, कभी तो मरेगा? ऐसा कन्सीव करना, ऐसी धारणा भी बनाना असम्भव है कि एक छोर हो जन्म का और दूसरा छोड़ मृत्यु का न हो। दूर हो, कितना ही दूर हो, अन्तहीन मालूम पड़े दूरी, लेकिन दूसरा छोर अनिवार्य है। एक छोर के साथ दूसरा छोर वैसा ही अनिवार्य है जैसे एक सिक्के के दो पहलू अनिवार्य हैं। अगर एक ही पहलू का कोई सिक्का हो सके तो असम्भव मालूम पड़ता है। नहीं हो सकता है। दूसरा पहलू होगा ही, क्योंकि एक पहलू को होने के लिए भी दूसरे पहलू को होना पड़ेगा।

योग-विज्ञान का दूसरा सूत्र है-प्रत्येक चीज दोहरे आयाम की है। होने का एक आयाम है-एग्जिस्टेन्स का। नॉन-एग्जिस्टेन्स का-दूसरा आयाम है, न-होने का। जगत है, जगत नहीं भी हो सकता हैं। हम हैं, हम नहीं भी हो सकते हैं। जो भी है, वह नहीं भी हो सकता है।

नहीं होने का आप यह मतलब मत लगा लेना कि कोई दूसरे रूप में हो जायेगा। बिल्कुल नहीं भी हो सकता है। अस्तित्व एक पहलू है, अनिस्तत्व दूसरा पहलू है। सोचना कठिन मालूम पड़ता है कि नहीं होने से होना कैसे निकलेगा! होना नहीं-होने में कैसे प्रवेश कर पायेगा? लेकिन अगर हम जीवन के चारों ओर देखें तो हमें पता चलेगा कि प्रति पल जो नहीं है, वह होगा, जो है, वह नहीं-होने में होगा।

यह सूर्य है हमारा, यह रोज ठण्डा होता जा रहा है। उसकी किरणें शून्य में खोती जा रही हैं। वैज्ञानिक कहते हैं, चार हजार वर्ष तक और गरम रह सकेगा। चार हजार वर्षों में इसकी सारी किरणें अनन्त में खो जायेंगी, तब वह भी शून्य हा जायेगा। अगर शून्य में किरणें खो सकती हैं तो फिर शून्य से किरणें आती भी होंगी, अन्यथा शून्य का जन्म कैसे होगा? विज्ञान कहता है कि हमारा सूर्य मर रहा है, लेकिन दूसरे सूर्य दूसरे छोरों पर पैदा हो रहे हैं। वे कहाँ से पैदा हो रहे हैं? वे शून्य से पैदा हो रहे हैं।

वेद कहते हैं कि जब कुछ नहीं था, उपनिषद भी बात करते हैं कि जब कोई चीज अस्तित्व में नहीं थी, बाइबिल भी बात करती है उस समय की जब कुछ नहीं था, न-कुछ से, नथिंगनेस से, उस न-कुछ से होना पैदा होता है और होना प्रतिपल न-कुछ में लीन होता चला जाता है। अगर हम पूरे अस्तित्व को एक समझें तो इस अस्तित्व के नीचे भी हमें अनस्तित्व को स्वीकार करना पड़ेगा।

योग का दूसरा सूत्र है प्रत्येक अस्तित्व के पीछे अनस्तित्व जुड़ा है।

शक्ति के दो आयाम हैं, अस्तित्व और अनस्तित्व। शक्ति हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है, अस्तित्व और अनस्तित्व। शक्ति है यह एक पहलू है, प्रलय दूसरा पहलू है। ऐसा नहीं है कि सब कुछ सदा रहेगा! खोयेगा, छिन्न-भिन्न हो जायेगा। फिर-फिर होता रहेगा। जैसे एक बीज को तोड़कर देखें तो कहीं किसी वृक्ष का कोई पता नहीं है। कितना ही खोजें, वृक्ष की कहीं कोई खबर नहीं मिलती, लेकन सिर्फ इस छोटे से बीज से वृक्ष आता जरूर है। कभी भी नहीं सोचा कि बीज में जो कभी नहीं मिलता, वह कहाँ से आता है। और इतने छोटे-से बीज में इतने बड़े वृक्ष का छिपा होना! फिर वह वृक्ष बीजों को जन्म देकर खो जाता है। ठीक ऐसे ही पूरा अस्तित्व बना है, खोता है।

शक्ति अस्तित्व में आती है और अनस्तित्व में मिल जाती है। अनस्तित्व को पकड़ना बहुत कठिन है। अस्तित्व तो हमें दिखाई पड़ता है। इसलिये योग की दृष्टि से जो सिर्फ अस्तित्व को मानता है, जो समझता है कि अस्तित्व ही सब-कुछ है, वह अभिनय को देख रहा है। और अभिनय को जानना ही अज्ञान है। अज्ञान का अर्थ न-जानना नहीं है, अज्ञान का अर्थ अभिनय को जानना है। जानते तो हम हैं हीं अगर हम इतना भी जानते है कि मैं नहीं जानता तो भी मैं जानता तो हूँ ही। जानना तो इसमें है ही। इसलिए अज्ञान का अर्थ न-जानना नहीं है। अज्ञानी से अज्ञानी भी कुछ जानता ही है। अज्ञान का अर्थ योग की दृष्टि में आधे को जानना हैं

और ध्यान रहे, आधा सत्य असत्य से बदतर होता है, क्योंकि असत्य से छुटकारा सम्भव है, आधे सत्य से छुटकारा बहुत मुश्किल होता है। वह सत्य भी मालूम पड़ता है और सत्य होता ही नहीं।

– चेतना का सूर्य-2

दिन को पूरी तरह से जी लो।

–ओशो

दिन को पूरी तरह से जी लो।

हर रोज रात को करने वाली छोटी सी ध्यान विधि।

जब मैं कहता हूं कि अतीत से मुक्त हो जाओ उसका अर्थ है कि अब से दिन प्रतिदिन इस प्रयोग को करना है। जो भी करोगे वह रोज का कार्य हो। हर रात सोने से पहले दिन का अंत कर दो। अस्तित्व में यह समाप्त हो चुका है; अब इसे मन में जारी रखना व्यर्थ है। इसे समाप्त ही हो जाने दो। इसे अलविदा कह दो।

यदि दिन में कुछ अधूरा रह गया है तो उसे पूरा करना मुश्किल है। उसे पूरा कर लो, मन में पूरा करो। तुम रास्ते से गुजर रहे हो और तुम एक सुंदर स्त्री को देखते हो और तुम उसे गले लगना चाहते हो। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता; कुछ अधूरा छूट गया है।

इसके पहले कि तुम सोने जाओ, पूरे दिन को देखो कि क्या अधूरा रह गया है। इसे मन के तल पर पूरा करो : उसे गले लगाओ। उस क्षण को फिर से जियो, कल्पना में उसे गले लगाओ, उसे धन्यवाद दो, और उससे मुक्त हो जाओ। अधूरी चाहत की तरह उसे मत ढोते रहो। मन केवल अधूरे क्षणों को ही ढोता रहता है। वह अटक जाते हैं, क्योंकि हर अनुभव पूर्ण होना चाहता है। प्रत्येक घटना के भीतर यह आंतरिक प्रक्रिया होती है जो उसे पूर्ण होने के लिए बाध्य करती हैं। बीज वृक्ष बनना चाहता है, बच्चा जवान होना चाहता है, कच्चे फल अब पक जाना चाहते हैं, और ऐसा ही होता चला जाता है। हर चीज अपने आप को पूर्ण कर लेना चाहती हैं; पूर्ण होना एक आंतरिक अभिक्षा है। और ऐसा ही हर अनुभव के साथ होता है। तुम यदि किसी को चोट पहुंचाना चाहते थे और यह संभव नहीं था, यह व्यवहारिक नहीं था। यह बहुत महंगा पड़ता और तुम उसके लिए तैयार नहीं थे। इससे पहले कि तुम सोने जाओ, इसे कर लो। सोने से पहले इससे आधा घंटा करो, और यह तुम्हारा ध्यान होगा : समाप्त करते जाओ। सुबह से प्रारंभ करके हर उस कार्य को पूरा कर लो जो अधूरा रह गया था। तुम यह जानकर चकित हो जाओगे कि इसे पूरा किया जा सकता था। और एक बार यह पूरा हो जाए, तुम दिन में प्रवेश कर जाओगे।

बच्चों में अतिन्द्रिय क्षमताओं का विकास

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न : आप कहते हैं कि चमत्कार नहीं होते, फिर अतिन्द्रिय क्षमताएं कैसे घटित होती है?

पहले चमत्कार की परिभाषा समझ लीजिये। चमत्कार यानी जिसमें कार्य-कारण हमें नजर नहीं आ रहा। उसको हम कहते हैं जादू या चमत्कार। और जहाँ कार्य कारण दिखाई देता है, वहाँ हम वैज्ञानिक ढंग से सोच पाते हैं कि ऐसा करने से ऐसा घटित हुआ। ये-ये कारण थे जिनकी वजह से ये कार्य हुआ।

अब आप समझ लीजिये हमारी क्षमताएं क्या हैं। जैसे हमारी बाहरी इंद्रियों की शक्ति है देखने की, सुनने की। ठीक वैसे हमारी भीतरी क्षमताएं भी हैं। वे अकारण नहीं है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति टेलीपैथी कर सकता है। दूसरों के विचार पढ़ सकता है। कोई व्यक्ति आंख बंद करके देख सकता है।

हमारे यहाँ मिड-ब्रेन एक्टिवेशन कार्यक्रम होता है जिसमें छोटे-छोटे बच्चों को सिखाते हैं आज्ञा चक्र को एक्टिवेट करना और उसके बाद वो हाथ से स्पर्श करके बता सकते हैं कि किसी चीज का रंग कौन-सा है?वो कान में लगाकर किसी चीज को पढ़ सकते हैं कि इसमें क्या लिखा है?आप मोबाइल उल्टा रख दीजिए और पूछिए कि बताइए इसमें मैसेज आया है, उसमें क्या लिखा है? वो बता देंगे कि क्या लिखा है।

ऊपर से देखने में लगेगा कि चमत्कार है किंतु यह चमत्कार नहीं है। एक उदाहरण से समझिए। समझो आप अपना मोबाइल लेकर किसी जंगल में पहुँच गईं। वहाँ के आदिवासी लोगों ने कभी मोबाइल ना देखा था और आपने उनके सामने ऑडिओ कॉल किया, वीडियो कॉल किया और दुनिया के दूर-सुदूर देशों के लोगों से बातचीत कर ली। आदिवासी कहेंगे की बड़ी चमत्कारी महिला है। लेकिन हमें पता है कि चमत्कार नहीं है क्योंकि हमको मोबाइल की मेकनिजम का पता है। इसके पीछे जो कार्य कारण हो रहा है, उसका हमें तकनीकी ज्ञान है तो हमारे लिए वह चमत्कार नहीं है। हमें टेक्नीक पता है।

ठीक ऐसे ही अध्यात्म की भाषा में मिड-ब्रेन को आज्ञा चक्र या तृतीय नेत्र, थर्ड आई, सिक्स्थ सेंस भी कहा जाता है। वह छठी इंद्रिय है हमारी। उसमें अद्भुत क्षमताएं हैं। लेकिन चूंकि सामान्य व्यक्ति को उसके बारे में ज्ञान नहीं है, उनको ऐसा लगता है कि चमत्कार हो गया। आदमी बंद आँखों से कैसे देख रहा है?

इनट्यूशन कैसे हो जाता है?अधिकांश महिलाओं में इनट्यूशन पावर होता है, पुरुषों में अंतः प्रेरणा की कमी होती है। कोई पूछे कि इनट्यूशन कहाँ से आया तो कोई भी नहीं बता सकता कहाँ से आया। लेकिन कहीं से आया और यह एक प्रातिक घटना है, हमको पीछे का कारण नहीं पता तो हमको चमत्कार जैसा लगता है। वास्तव में चमत्कार कुछ भी नहीं है।

8 साल से 16 साल तक के बच्चों की आयु में यह क्षमता बड़ी आसानी से विकसित की जा सकती है और यहाँ पर मिड ब्रेन एक्टिवेशन के शिविर में यही सिखाते हैं। दोनों भृकुटियों के बीच में जहाँ टीका लगाया जाता है, उसके करीब डेढ़ इंच पीछे पिनीअल ग्रंथि है। मेडिकल भाषा में जीसको पिनीअल ग्लैंड कहते हैं, वहीं आध्यात्मिक की भाषा का आज्ञा चक्र है, शिवनेत्र है और उसमें बड़ी अतीन्द्रिय क्षमताएं हैं। चमत्कार कुछ भी नहीं है। आम आदमी को उसके पीछे छिपे कार्य कारण का पता नहीं है। इसलिए उसको चमत्कार जैसा लगता है।

वास्तव में चमत्कार नहीं होते। इसका यह मतलब नहीं है कि अतीन्द्रिय क्षमताएं नहीं होतीं या सिक्स्थ सेंस नहीं होता। लेकिन इनके पीछे भी एक कार्य–कारण सिद्धांत ही काम करता है।

प्यारे मित्रो, मिड ब्रेन ऐक्टिवेशन में आप सभी का स्वागत है। 27 जून से 1 जुलाई की दोपहर तक 8 से 16 साल के बच्चे इसमें शामिल हो सकते हैं। धन्यवाद।

क्वोरा प्रश्नोत्तर

हिंदी में क्वोरा पर पढ़ने के लिए संबंधित लिंक पर क्लिक कीजिए

- निगेटिविटी से मुक्ति
- सब बंधनों के बाहर विश्राम
- प्रेम एवं स्वतंत्रता का संतुलन
- जन्म दिवस परिवर्तित क्यों?
- आषाढ़ माह-गुरु पूर्णिमा
- गीता और महागीता में भेद
- केवल ज्ञान, कैवल्य उपनिषद

आदमी ऐसा ही जीता है--तिरछा-तिरछा

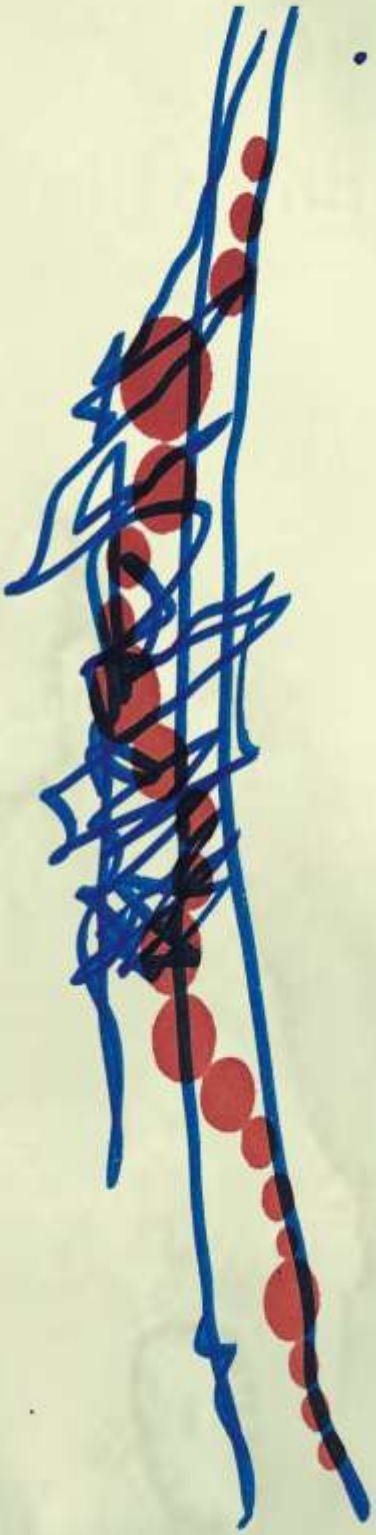

प्रिय कृष्ण सरस्वती,

प्रेम।

एक सूफी दरवेश ने किसी द्वार पर भिक्षा के लिए प्रार्थना की।

गृहपति ने उसकी ओर देखे बिना ही कहा: 'क्षमा करें--किंतु घर में कोई है नहीं।'

फकीर हंसा और बोला: 'लेकिन, मैं किसी को कहां मांगता हूं--मैं तो सिर्फ भोजन ही मांगता हूं।'

इस बार गृहपति ने चौंककर फकीर की ओर देखा।

लेकिन फिर भी कहा: 'मैं समझा--पर भोजन देने के लिए ही तो कोई आदमी घर में नहीं है?'

फकीर पुनः हंसा और बोला: 'महानुभाव! आदमी घर में नहीं है?फिर आप कौन हैं?--आदमी नहीं?'

गृहपति उठा और भोजन लेकर आया।

पर फकीर ने भोजन लेने से इनकार कर दिया और कहा: 'मैं भलीभांति समझ गया था कि भोजन आपको नहीं देना है पर यही बात मैं आपसे सीधी-सीधी सुनना चाहता था।'

आदमी ऐसा ही जीता है--तिरछा-तिरछा।

जो कहना है--वही नहीं कहता यद्यपि उसे ही और-और तरह से कहना चाहता है।

जो करता है--वही नहीं करता यद्यपि उसे ही पीछे के मार्गों से करना पड़ता है।

जो होता है--वही नहीं होता है यद्यपि उसके अतिरिक्त और कुछ हो नहीं सकता है।

20-2-1971

(प्रतिः स्वामी कृष्ण सरस्वती, अहमदाबाद)

– पद घुंघरु बांध – 85

इस स्तंभ में प्रत्येक माह एक कहानी शेयर करेंगे जो हर उम्र वाले बच्चों, युवाओं और बूढ़ों को प्रेरणा देगी

गप्पबाजी में कुशल धार्मिक लोग

–ओशो

नानक कहते हैं– 'जो कोई गप्प हांकने वाला इसमें कुछ कहने जाता है, उसे अपनी मूर्खता का पता तब चलता है, जब उसके मुंह पर मार पड़ती है। वह आप ही जानता है और आप ही देता है।'

बहुत हैं धर्म के जगत में गप्प हांकने वाले। क्योंकि जितनी सुविधा गप्प हांकने की धर्म के जगत में है, उतनी और कहीं भी नहीं है। क्योंकि सारा मामला ही अलौकिक है। और सारा मामला ही रहस्यपूर्ण है। और सारा मामला अंधकार में है। प्रमाण तो कुछ है नहीं। इसलिए बहुत गप्पें धर्म के नाम पर चलती हैं।

इसलिए तो दुनिया में तीन सौ धर्म हैं। नहीं तो तीन सौ धर्म हो सकते हैं?धर्म होता तो एक ही होता, तीन सौ धर्म कैसे हो सकते हैं। और इन तीन सौ धर्मों के भी तीन हजार संप्रदाय हैं छोटे–मोटे। निश्चित ही सत्य के संबंध में बहुत सी गप्पें हांकी गयी हैं। और रास्ता तो कुछ भी नहीं है जांचने का कि क्या गप्प है और क्या सही है! और गप्प हांकने वाले बहुत कुशल हैं।

महावीर सात नर्कों की बात करते थे कि सात नर्क हैं। कैसे प्रमाण लगाओगे?कैसे पता लगाओगे कि सात हैं?महावीर का विरोधी था मक्खली गोसाल नाम का एक आदमी। जब उसके शिष्यों ने उसे जा कर कहा कि तुम्हें भी पता है कि महावीर कहते हैं, सात नर्क हैं! उसने कहा कि महावीर को पूरा पता नहीं, नर्क सात सौ हैं।

अब क्या करोगे?यह मक्खली गोसाल ठीक कहता है कि महावीर ठीक कहते हैं?रास्ता क्या है दोनों के बीच तय करने का कि कौन सही है?

लेकिन वही हुआ, जो नानक कहते हैं। मक्खली गोसाल के जीवन में वही हुआ। उसने जीवन भर गप्पें हांकीं, मरते वक्त पछताया। क्योंकि जब मौत करीब आयी तब वह घबड़ाया कि अब क्या

होगा?जब मौत करीब आयी तब वह कंपने लगा। जब मौत करीब आयी तब उसने अपने भक्तों से कहा कि जो भी मैंने कहा है, वह सब झूठ था। और तुम मेरी लाश को सड़कों पर घसीटो। जब मैं मर जाऊं तो तुम मेरी लाश को सड़कों पर घसीटना और लोगों से कहना मेरे मुंह पर थूकें। क्योंकि इस मुंह से मैंने सिवाय झूठ के और कुछ भी नहीं बोला।

पर मक्खली गोसाल भी आदमी हिम्मत का रहा होगा, नहीं तो यह भी कौन करे! और यह आदमी भी ईमानदार रहा होगा। नहीं तो जिंदगी भर झूठ बोलता रहा, एक क्षण भर के लिए और साध लेता चुप्पी, और मर जाता। तो शायद मक्खली गोसाल का धर्म होता। क्योंकि उसके बड़े भक्त थे और उसके कई मानने वाले थे। वह महावीर के बड़े से बड़े प्रतियोगियों में से एक था। पहले महावीर का शिष्य था। फिर जब उसने कुछ थोड़ा सा सीख लिया, तो उसने अलग संप्रदाय खड़ा करने की कोशिश की।

निश्चित ही गप्प हांकने वाला होगा। क्योंकि जब महावीर को पता चला, तो महावीर ने कहा कि यह तो बड़ी हैरानी की बात है, उसे तो अभी पहली झलकें भी नहीं मिली थीं। लेकिन वह महावीर के पास--जो वे कहते थे, समझाते थे--वह सब उसने समझ लिया। होशियार आदमी था, कुशल आदमी था, बोल सकता था, लिख सकता था, पंडित था। उसने अपना संप्रदाय खड़ा कर लिया।

महावीर जब गांव में आए, जिस गांव में मक्खली गोसाल ठहरा था, तो उन्होंने कहा कि मैं मक्खली गोसाल को मिलूंगा। क्योंकि वह मेरा पुराना शिष्य है। और उससे पूछूंगा, पागल! तू यह क्या कर रहा है?तुझे खुद भी पता नहीं है। मक्खली गोसाल से मिलना हुआ। तो झूठ बोलने वाले का तुम भरोसा ही नहीं कर सकते। उसने महावीर को ऐसा देखा जैसा कभी देखा ही न हो।

महावीर ने कहा कि क्या तू बिल्कुल भूल गया कि तू वर्षों मेरे साथ रहा?

मक्खली गोसाल ने कहा, आप भ्रांति में हैं। जो आपके साथ था वह आत्मा तो जा चुकी। इस शरीर में, उसी शरीर में यह नयी आत्मा तीर्थंकर की प्रवेश कर गयी है। मैं वह नहीं हूं जो आपके साथ था। यह देह भर आपके साथ थी, यह मुझे पता है। सुना है। लेकिन वह आदमी मर चुका, जो तुम्हारा शिष्य था। इसलिए भूल कर अब किसी से यह मत कहना कि मक्खली गोसाल मेरा शिष्य था। यह तो एक तीर्थंकर की आत्मा मुझ में प्रवेश कर गयी है।

महावीर चुप रह गए होंगे। अब इस आदमी से क्या कहना! और उसका बड़ा प्रभाव था। उसके हजारों भक्त थे। लेकिन फिर भी आदमी अच्छा रहा होगा। मरते वक्त उसे यह एहसास तो हो गया!

वही नानक कह रहे हैं कि जो कोई गप्प हांकने वाला इसमें कुछ कहने जाता है, तो उसे अपनी मूर्खता का पता तब चलता है, जब उसके मुंह पर मार पड़ती है।

जब मौत की मार पड़ती है, और जब जिंदगी हाथ से छूटने लगती है, तब उसे पता चलता है कि मैं व्यर्थ ही बातें करता रहा स्वर्गों-नर्कों की। और मुझे कुछ भी पता नहीं। और जिंदगी हाथ से बीत गयी। मैं जिंदगी के कोई आधार न रख पाया। कागज की नावें बहाता रहा। अब डूबने का वक्त आया, तब पता चलता है।

सम्हलना! कभी भी धर्म के संबंध में जो पता न हो, भूल कर मत कहना। पता हो तो ही कहना, अन्यथा चुप रहना। क्योंकि मन बड़े अन्वेषण कर लेता है। मन बड़े आविष्कार कर लेता है। मन खोजने में बड़ा कुशल है। और एक दफा तुम्हारा मन खोजने लगे और बातें करने लगे और चर्चा चल पड़े, तो एक जाल शुरू हो जाता है जो अपने आप बढ़ता है। तुम्हें फिर कुछ करना नहीं पड़ता। एक शब्द दूसरे को पैदा कर देता है। एक बात दूसरी बात को पैदा कर देती है। फिर तुम आगे बढ़ने लगते हो।

-एक ओंकार सतनाम-11

Insight into Sannyas Names

- Osho

Anand means bliss and bhakta means devotion, a devotee. And that is going to be your path.

[Osho said that Bhakta should make it his very style of life to be loving, whether someone was present or not, for the emphasis should be not on the object of love, but on the feeling of love itself. Whatsoever you regard with love, with respect, becomes a person and is no longer just a thing....]

So, for a loving person the whole world becomes luminous with personality. That's what God means. There is no way to approach God directly, only through love. So slowly go on giving things a personality. And that depends on your attitude and how you approach them. You can go to the tree and touch it as if you are touching your beloved. In that moment that tree becomes your beloved, because it is you who creates your world.

So, devotion is nothing but a tremendous creativity and the whole world is by and by transfigured, transplanted into a new dimension. Everything becomes luminous with personality. Nothing is a thing... everything has a soul. You impart the soul, or it has always been there but you were blind. Love opens your eyes and you discover -- yes, that is more correct: you discover the soul.

So let it be a continuous adventure. Look at things, look at people, at the sky, but let love be flowing. Your love will create the world around you, a new world, a new being That new being is what in the old ages people used to call God. God is not somebody sitting

somewhere. Unless you impart godhood to existence, God is nowhere to be found. Unless you create Him, He is nowhere. God exists in the love of the devotee. You get me? In the love of the devotee, God exists.

So if somebody says, 'I would like to know God,' he is asking the wrong question. He should ask, 'How should I create my God ?' That is the right question. If somebody says, 'First I will have to find Him and then I can worship and pray,' worship is never going to happen to him, because in the first place you have to create God. You have to create the temple and you have to create the God who makes His abode in that temple.

Devotion is that creativity, that poetic way of looking at the world. Romance in the eyes is what devotion is. Poetry in the heart, that's what devotion is.

So let that by and by be imbibed by you. Create your God, because there is no other way to find Him. So only great creative people can find God. Others simply waste their energy and time. It is not a question of logic. Logic is a very destructive force. It is a question of love.

So from this very moment start moving in a very very loving way. If somebody comes, even if he is not good to you, still he is God, but God is not choosing to be good with you in this moment, so okay. But that doesn't make any difference. Even if somebody comes and kills you, it is God who has become the murderer. Good if He chooses that way, but don't take the godhood from the person. He may be a murderer but he remains a God. Somebody insults you, he is very antagonistic and full of hatred for you; that makes no difference... God is playing that way.

It is said about Mansoor, the great sufi mystic, that when he was killed, he laughed. He was murdered, butchered, in a crueller way than Jesus. His limbs were cut one by one: first his feet, then his hands, then his eyes, then his tongue. He was killed pan by pan and it was a tremendous agony, but when he was being killed, he laughed. He looked at the sky and laughed tremendously. an uproarious laugh. People were shocked.. .they could not believe it -- 'Has he gone mad? This is no situation in which to laugh!'

And when somebody asked from the crowd, 'Why are you laughing, Mansoor?' he said, 'I am laughing because He cannot deceive me. In whatsoever form He comes, I will recognise Him. So I am laughing at Him!' He was laughing to God saying,'You cannot deceive me. In whatsoever form you come, I will love you! You cannot trick me. I have known you and I have known you once and for all.'

So become a devotee. This is your name -- forget the old name. Now this is going to be your birthdate from now onwards. Remember this day as your birth. The old man is gone. Say goodbye to him, because he has brought you here.

- A rose is a rose is a rose

वीडियो-प्रश्नोतर

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

1. जीवन में दुख का मुख्य कारण क्या है? दुख से मुक्ति का उपाय क्या है?

2. शरीर, मन और चेतन पर भोजन का प्रभाव!
ध्यान में प्रगति के लिए कैसा भोजन करें?

मा अमृत प्रिया

3. दुःख का मुख्य कारण?

4. ओशो की दृष्टि में प्रसन्नता आध्यात्मिक गुण क्यों है?

Welcome with Family & Friends
for
Swami Shailendra Saraswati ji's
Birthday Celebration
www.osheofragrance.org
Sunday | 18th | June
at
Shree Rajneesh Dhyan Mandir,
Kumashpur-Deepalpur Road, Vill. Murshidpur,
Bahalgarh, Distt. Sonipat, Haryana
Program
3.00 PM - Registration
4-5.30 PM - Meditation
5.30-6.30 PM - Tea & Snacks
6.30 PM - Celebration & Musical program
by Swami Anhad Jyot
9.00 PM - Prasadam
Voluntary Contribution
Prior Registration Is SOLICITED
Please register at the following numbers
9464247452, 9311806388, 9811064442
9466661255,9890341020, 8889709895
Ma
AmritPriya
Swami
Shailendra Saraswati

सभी साधकों को
स्वामी जी के
जन्मदिन की
अनंत
शुभकामनाएं।
17 जून 2023

दिल जिससे जिंदा है

दिल जिससे जिंदा है
१. दिल जिससे जिंदा है
२. महफिल में रंग आया
३. मुझको दुनिया से क्या
४. ओशो हंसती हुई
५. ओशो जमीं पे आपके आने का
६. लो डगमगाती दिल की कश्ती

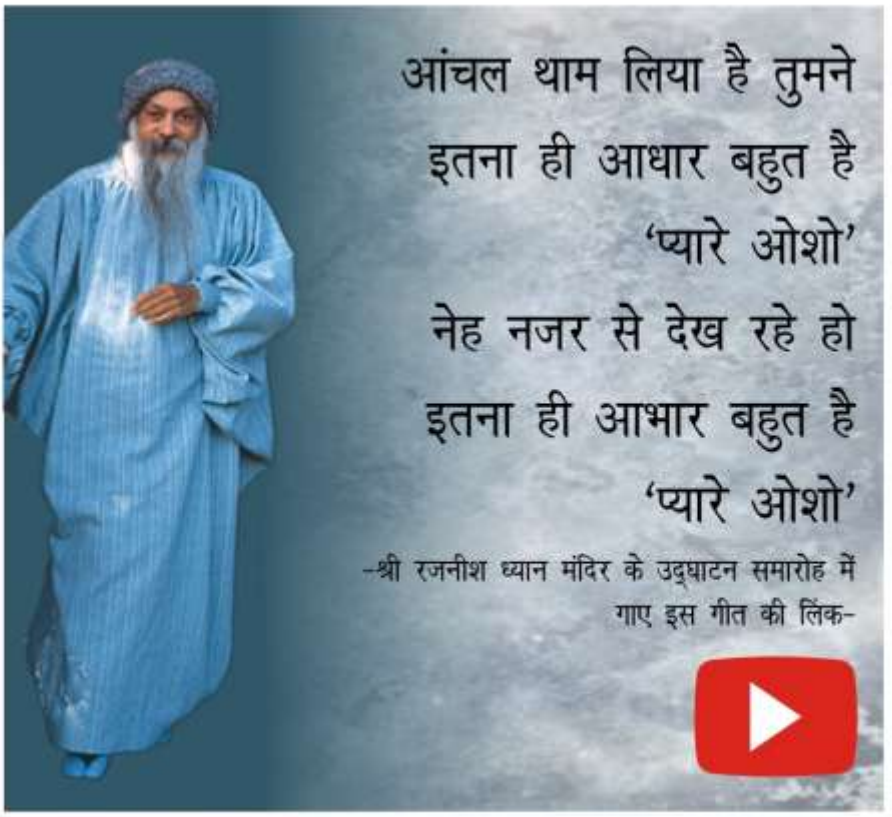
आंचल थाम लिया है तुमने
इतना ही आधार बहुत है
'प्यारे ओशो'
नेह नजर से देख रहे हो
इतना ही आभार बहुत है
'प्यारे ओशो'
-श्री रजनीश ध्यान मंदिर के उद्घाटन समारोह में
गाए इस गीत की लिंक-

हंस दो जरा...!

१. आजकल के पांचवी क्लास के बच्चों के पास भी फोन है। हम जब पांचवी में थे तो इस बात से खुश हो जाते थे की छटवीं में जाते ही पेन लिखने को मिलेगा।

२. एक दिन नसरुद्दीन ने अपनी बीवी को बताया कि देहात से आए एक अनपढ़ ग्रामीण को अंग्रेजी के केवल दो शब्द आते थे, फिर भी उसने मुंबई जाकर दो महीने में ही करोड़ों रुपये कमा लिए।

बीवी ने उत्सुकतावश पूछा- मैं जानना चाहती हूं कि वे दो जादुई शब्द क्या थे?

मुल्ला नसरुद्दीन उवाच- 'हैण्ड्स अप!'

३. तीन कजूंस मित्र यानी नसरुद्दीन, सेठ चंदूलाल और सरदार विचित्तरसिंह जी प्रवचन सुनने अक्सर जाया करते थे। क्योंकि यही एकमात्र मुफ्त मनोरंजन का साधन शहर में उपलब्ध था। एक दिन प्रवचनकर्ता संत ने सत्कार्य करने की प्रेरणा दी, और अच्छे कार्य में दान देने की पुरजोर अपील की। जैसे-जैसे दान की थाली उनके निकट आने लगी, वैसे-वैसे तीनों अत्यंत बेचैन हो उठे। अंततः चंदूलाल बेहोश होकर गिर पड़ा। बाकी दो मित्रों ने उसे उठाकर ले जाने का सत्कार्य किया। और बेचारे का अस्पताल में इलाज कराने के लिए लोगों से दान भी प्राप्त कर लिया।

कबीर जयंती विशेष

१. कबीर से ओशो तक - स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

२. कबीर के पांच सूत्र - मा अमृत प्रिया

३. ओशो की यह अंग्रेजी व्याख्यानमाला कबीर साहब के किस पद पर आधारित है: 'एक्सटैसी: द फॉरगॉटन लैंग्वुएज'?
'एक्सटैसी: द फॉरगॉटन लैंग्वुएज', 'आनंद: अतिरेक की भूली हुई भाषा'

४. क्या जीवन में आनंद की प्राप्ति असंभव है? 'देख कबीरा रोया', 'नानक दुखिया सब संसार', 'जीवन दुख है' आदि संत-वचनों में दुख की इतनी चर्चा क्यों?

५. कबीर साहब पर ओशो ने एक प्रवचनमाला दी है--'गूंगे केरी सरकरा' -- इसका भावार्थ क्या है?

६. 'अकथ कहानी प्रेम की'--ऐसा क्यों कहा जाता है? अवर्णनीय का वर्णन क्यों किया जाता है?

७. 'ढाई आखर प्रेम का'--संत कबीर के इस सुप्रसिद्ध वचन पर ओशो की कौन सी किताब प्रकाशित हुई है?

८. कबीर के प्रति ओशो का प्रेम - संत कबीर के वचनों पर आधारित हैं ओशो की ३० पुस्तकों के शीर्षक। उपरोक्त क्वोरा लिंक पर सभी की संक्षिप्त जानकारी, ऑडियो प्रवचन एवं किताबों को डाउनलोड करने की लिंक, संबंधित वीडियो लिंक भी उपलब्ध हैं।

अंतस का जागरण है समाधि : ओशो

–डॉ. सरोज कुमार वर्मा

दुरूह से दुरूह विषयों पर भी ओशो अपनी बात बड़ी सहजता से कहते हैं। समभारतीय दर्शन के वे अनूठे दार्शनिक हैं। अति सरलता से समझा देना उनकी प्रमुख विशेषता है। परंतु यह समझना केवल बौद्धिक नहीं होता बल्कि हार्दिक होता है। इसलिए उनके शब्द केवल ऊपर-ऊपर से छूकर नहीं गुजर जाते, वरन अंदर तक गहरे उतर जाते हैं।

समाधि जैसी दुरूह अवधारणा के साथ भी ऐसा ही हुआ है। भारतीय दर्शन में समाधि का उल्लेख योग दर्शन में हुआ है जो योग की आठ सीढ़ियों से गुजरकर प्राप्त होती है। इसलिए यहाँ इसे प्राप्त करने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। मगर ओशो इसकी व्याख्या बेहद सरल ढंग से करते हैं। उनके अनुसार यह समाधि जागरण की अवस्था है--आत्म जागरण की। यह एकाग्रता से भिन्न है। क्योंकि एकाग्रता मन की बात होती है जबकि समाधि आत्मा का अनुभव होता है। एकाग्रता में मन के सारे विचार एक बिन्दु पर ही केन्द्रित हो जाते है। जबकि समाधि निर्विचार की अवस्था होती है, इस अवस्था में विचार पूरी तरह तिरोहित हो जाते हैं। और यह अवस्था आत्म-बोध से आती है।

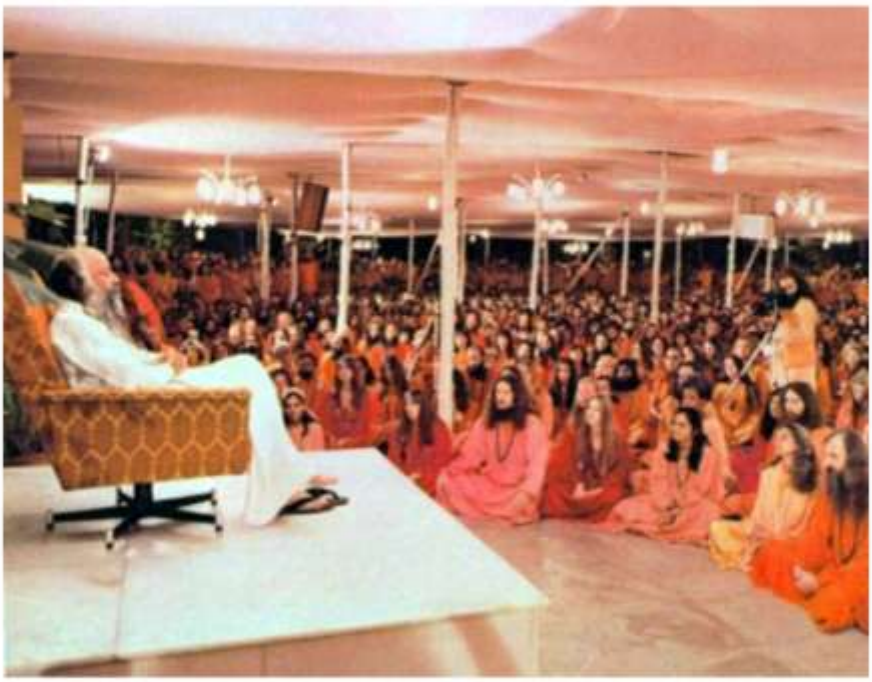

एक बार किसी साधक ने प्रश्न पूछा: भगवान, आपसे समाधि कैसे चुराएं?

ओशो ने कहा– 'काश यह हो सकता, तो शुभ होता, सुंदर होता। यह हो सकता, तो मेरा पूरा सहयोग होता। लेकिन समाधि चुराई नहीं जा सकती। समाधि तो जगानी होती है। समाधि बाहर से नहीं आती। नहीं तो कोई उपाय खोज लेते चुराने का, खरीदने का। कोई रास्ता बन जाता फिर। कोई विधि–विधान निर्मित हो जाता। लेकिन समाधि बाहर से आती ही नहीं, समाधि बाहर की घटना नहीं है। समाधि कोई वस्तु नहीं है। किन्हीं तिजोड़ियों में बंद नहीं है, अन्यथा तिजोड़ियां टूट जातीं। किन्हीं कठघरों में होती, सेंध लगा लेते। जमीनों में गड़ा खजाना होता, पता लगा लेते। समाधि तो तुम्हारी अंतर्दशा है, तुम हो, तुम्हारा होने का ही नाम है। एक है तुम्हारा होना सोया–सोया और एक है तुम्हारा होना जागा–जागा। उस जागे–जागे होने का नाम समाधि है।

समझो कि कोई आदमी सोया है। क्या वह सोया आदमी किसी आदमी की जागृति चुरा सकता है? क्या वह किसी जागे हुये आदमी की जागृति भीख में पा सकता है? कि मूल्य चुका सकता है?यह सोया है, इसे जागना होगा। और जागरण इसके भीतर से आएगा। जागरण की घटना आंतरिक घटना है। अंतस में दीया जलेगा तो समाधि होगी।

लेकिन तुम्हारा प्रश्न प्यारा है! तुम्हारे मन में यह भाव उठा, यह भी शुभ है, सुंदर है। तुम्हारे भाव से मुझे एतराज नहीं है। फिर चुराने की तो जरूरत तब उठती है जब समाधि छिपाई जा रही हो। समाधि तो छिपाए छिपती ही नहीं! यह तो सुबह का ऊगा सूरज जैसा है। इसे कैसे छिपाओगे?

जब भी किसी व्यक्ति के जीवन में समाधि घटती है, तो उसकी किरणें विस्तीर्ण होनी शुरू हो जाती हैं। भीतर दीया जला, बाहर रोशनी हुई, यह एक साथ, युगपत हो जाती है बात। और भी मजा है कि जिसे समाधि फलित होती है, वह बांटना चाहता है––बांट नहीं पाता, यह उसकी मजबूरी है। वह देना चाहता है––लेने वाले नहीं मिलते, यह उसकी मजबूरी है। लेने वाले भी मिल जाएं तो ले नहीं सकते, क्योंकि समाधि हस्तांतरणीय नहीं है।'

इसलिए ओशो अपने दर्शन में सदैव जागरण की बात करते हैं। उनके अनुसार आत्म–जागरण को उपलब्ध व्यक्ति नैतिक होता है, धार्मिक होता है, ध्यानी होता है; समाधिस्थ होता है। अतः ओशो के अनुसार समाधि को प्राप्त करने के लिए भीतर से जागा होना आवश्यक है, स्व–बोध जरूरी है।

–डॉ. सरोज कुमार वर्मा

फ्लैट नं०– 307, आशा बिहार फेज– 3 माड़ीपुर, मुजफ्फरपुर–842001 (बिहार)

संपर्क: 9835856030

पूर्ण रहस्य का ज्ञान संभव

- मा अमृत प्रिया

प्रश्न १ - मृत्यु बोध संबंधी साधना का प्रयोग हम अपने घर पर किस प्रकार कर सकते हैं?

अपने घर पर इसका प्रयोग करने की एक विधि हमारे पास ओशो छोड़ गए। ओशो ने स्वयं तथाता ध्यान करवाया है तीन बार। उस तथाता ध्यान को जब हम करते हैं और करते-करते एक दिन ये घटना घट जाती है। आप निरंतरता से अगर तीन महीने करेंगे ऐसे तो आपके जीवन में निश्चित रूप से परिणाम आएगा।

इसकी लिंक आप हमारे व्हाट्सएप नंबर पर मांग सकते हैं ताकि वो ध्यान आपको उपलब्ध हो सके। ओशो की अमृत वाणी मैं स्वयं।

प्रश्न २- यदि परमात्मा में लीन होने को ही मोक्ष मिलना कहते हैं तो क्या हम मनुष्य कभी भी पूर्ण रहस्य को नहीं जान पाएंगे?

देखें जीवन में, जीवन की घटनाओं को, सारे जगत को तीन हिस्सों में हम बांट सकते हैं।

पहला, हमें कुछ पता है जगत के बारे में, कुछ चीजें हैं जिसके बारे में हम जानते हैं वो ज्ञात की कैटेगरी में आते हैं।

दूसरा, कुछ चीजें हैं हम नहीं जानते लेकिन कल हम जान लेंगे। बहुत सारी खोजें, वैज्ञानिक खोजें ऐसी हैं जिनका कारण हमें पहले नहीं पता था लेकिन जब विज्ञान खोजता है और खोज से पता चल जाता है कि इसका यह कारण है, ये फार्मूला है, ये जो भी ढंग है, इसका होने का पता चल जाता है। कल तक नहीं पता था, आगे पता चल जाता है। लेकिन कुछ एक ऐसा हिस्सा है आस्तत्व की जिसका हम जितना जान ले उतना ही जानने को शेष रह जाता है।

सुकरात बहुत बड़े ज्ञानी हुए, जिनका नाम आज तक सबके हृदय में गूंजता है। यूनान के महान ज्ञानी, बुद्धपुरुष। उन्होंने कहा कि जब मैंने जाना तो मैंने इतना ही जाना कि मैं कुछ भी नहीं जानता। उनका वचन है जब मैं बच्चा था तो सोचता था कि मैं कुछ जानता हूँ और युवा हुआ तो फिर सोचा कि जानने जानने को खोजता हूँ और फिर बहुत सारी चीजें जो नहीं जान पाता हूँ लेकिन फिर भी जानने के लिए क्या करती? लेकिन जैसे वृद्ध हुआ तो मुझे पता चला कि मैं तो कुछ भी नहीं जानता।

'डेल्फी' यूनान में एक मंदिर है और वहाँ पर एक देवी जो कि आविष्ट हो जाती थीं। देवी अर्थात अज्ञात शक्ति से वो आविष्ट हो जाती थी और वो जो भी घोषणा करती थी उस आविष्ट स्थिति में वो बिल्कुल शत प्रतिशत सही होती थी। उन्होंने उस आविष्ट स्थिति में घोषणा की-'सुकरात जो है वो महाज्ञानी, परमज्ञानी है।'

लोगों ने आकर सुकरात से कहा कि डेल्फी की देवी आपके लिए ऐसा वक्तव्य देती है कि आप परम ज्ञानी और आप कहते हो कि मुझ जैसा अज्ञानी कोई नहीं, मैं तो कुछ भी नहीं जानता, मैं इतना ही जानता कि मैं कुछ भी नहीं जानता। तू पा करके मुझे ज्ञानी मत कहो।

सुकरात ने कहा, निश्चित रूप से डेल्फी की देवी की सब बातें सच निकलती है, लेकिन कह दो कि कम से कम ये बात तो बिल्कुल झूठ है उनकी। मैं ज्ञानी नहीं। जाकर लोगों ने देवी से कहा कि आपकी सारी बातें तो सच निकलती लेकिन एक बात गलत निकल गई। क्योंकि हमने जाकर सुकरात से पूछा और सुकरात ने जवाब दिया कि डेल्फी की देवी से जाकर कह दो कि तुम्हारी ये बात सही नहीं है, मैं कुछ भी नहीं जानता, मैं अज्ञानी हूँ। डेल्फी की देवी ने कहा, मेरा कोई भी वचन गलत नहीं निकल सकता। तुम जाकर सुकरात से कह दो कि देवी ने सिर्फ इसलिए तो कहा था कि तुम महाज्ञानी हो क्योंकि एक महाज्ञानी ही यही बोल सकता है कि मैं कुछ भी नहीं जानता।

अस्तित्व ऐसा है की हम जितना जान ले उतना ही जानने को शेष रह जाता है और कभी जब हम जानते हैं तो जानने वाला खो जाता है। ये ऐसा रहस्य है जिसको हम जानते है, जिसमें हम प्रवेश करते है, तो फिर हम सेपरेट नहीं बचते। अब परमात्मा को जानने जाओगे तो परमात्मा हो जाओगे। अब कौन किसको जानेगा?

ऐसे समझ लो एक नमक का पुतला है और नमक का पुतला सागर की गहराई नापने चला जाए। और कहता कि मैं आकर बताऊँगा सागर कितना गहरा है। बाकी लोग इंतजार करते हैं, नमक का पुतला उतरता जाता है, उतरता जाता, उतरता जाता है गहराई में। सोचता है, बड़ी खुशी से बताऊँगा। लेकिन जैसे जैसे गहराई आती है, मिटता जाता है, घुलता जाता है और लौट कर कभी नहीं आता।

ऐसे फिर दूसरा भी जाता है। वो भी ऐसा ही गल जाता है, मिट जाता है और लौट नहीं पाता। बहुत लोगों परमात्मा की गहराई को नापने गए। नाप नहीं पाए। अमाप्य।

निश्चित रूप से इसका जो अनुभव करता है वही परमात्मा हो जाता है। खोजने वाला खोज में विलीन हो जाता है और निश्चित रूप से वो भी रहस्य का हिस्सा हो जाता है। उस विराट का अनुभव तो होता है लेकिन अलग मनुष्य रहके नहीं होता, परमात्मा होकर ही होता है।

Ma Amrit Priya ji's

Devotional Songs

now available on multiple platforms

Spotify iTunes gaana amazonmusic

अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र

Osho fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895

Youtube page - Rajneesh Fragrance

Facebook page - Rajneesh Fragrance

Instagram - Osho Fragrance

Twitter - Rajneesh Fragrance

oMeditate App -
Osho Fragrance's Mobile App•••

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on monogram/Logo

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.

Download Osho Hindi & English Books from the link -

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंध के पिछले अंक...

ओशो सुगंध मासिक ई-पत्रिका जो पढ़ी, देखी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें समाधि में डूबने, आनंद व भाव-विभोर से भरपूर प्रवचनो और भजनों के ऑडियो-वीडियो लिंक्स दिए गए हैं।

नियमित रुप से ई-पत्रिका प्राप्त करने हेतू, अपने मोबाइल नं. को पंजीकृत करवाने के लिए सामने दिए गए चिह्न को दबाएं।

पत्रिका को खोलने के लिए पुस्तक वाले चिह्न को दबाएं।

अभी तक के सभी अंकों के लिए चिह्न को दबाकर उन्हें देख सकते हैं।

क्या आप ओशो सुगंध नियमित प्राप्त करना चाहते हैं

यह एक जीवंत पत्रिका है
ऊपर दिए गए चिह्न को
स्पर्श करने से आपका संदेश
हम तक पहुँच जाएगा
और पत्रिकाएं नियमित रूप से
आप तक भेजने के लिए
आप का मोबाइल न.
पंजीकृत हो जाएगा।

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक
के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका
जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा
जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे
निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से
आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें
पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ
भेजने के लिए आपका मोबाइल नं.
पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

निर्वाण उपनिषद

108 उपनिषदों में एक अद्भुत ग्रंथ है— निर्वाण उपनिषद। वेदांत की पराकाष्ठा है। ओशो ने इसकी विस्तृत व्याख्या की है माउंट आबू के एक शिविर में। ऋषि ने विविध उपमाओं से समझाया है कि आध्यात्मिक व्यक्ति, एक संन्यासी कैसा होता है? एक–एक सूत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है।

क्या आप इन सूत्रों को समझकर अपने जीवन में उतारना चाहते हैं? तो आइए, 17 से 22 जुलाई तक आयोजित निर्वाण साधना शिविर में आपका हृदय से स्वागत है।

स्थान – श्री रजनीश ध्यान मंदिर

बुकिंग और अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :

917988969660

917988229565